राष्ट्रवाद

साहित्य और समाज

प्रो. एस. डी. शर्मा

डॉ. वन्दना श्रीवास्तव

डॉ. रमेश प्रताप सिंह

डॉ. क्षमा मिश्रा

डॉ. देविका शुक्ल

पुस्तक : राष्ट्रवाद : साहित्य और समाज
संपादक : प्रो. एस. डी. शर्मा
डॉ. वन्दना श्रीवास्तव, डॉ. रमेश प्रताप सिंह
डॉ. क्षमा मिश्रा, डॉ. देविका शुक्ल
प्रकाशक : **आशा प्रकाशन**
प्रकाशक एवं वितरक
8/48 (1), आर्य नगर, कानपुर - 208002
मो०: 07985242564, 09889121111
E-mail : asha.prakashankanpur@gmail.com
ISBN : 978-93-81022-79-5
संस्करण : प्रथम 2018
मूल्य : ₹995 /-
शब्द साज : शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : ज्ञानोदय प्रिन्टर्स, कानपुर

3. राष्ट्र, राज्य व राष्ट्रीयता 246
डॉ0 धीरज सिंह
4. राष्ट्रवाद और बाबा साहब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर 253
डॉ. डी. सी. आनंद
5. भारत में राष्ट्रवाद का विकास 259
डॉ0 सुप्रिया वर्मा
6. राष्ट्रवाद का विकास और वर्तमान चुनौतियाँ 272
डॉ0 जितेन्द्र कुमार परमार
7. भारतीय राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक परिदृश्य 278
डॉ0 श्रीप्रकाश मिश्र
8. राष्ट्रवाद : बदलते संदर्भ 284
डॉ0 अंजुला सक्सेना
9. राष्ट्रवाद की तात्त्विक अवधारणा और भारत का राष्ट्रवाद 293
रघुनाथ पाण्डेय
10. राष्ट्रवाद का भारत के विकास में योगदान 302
डॉ0 बिनीता पाण्डेय
11. मीडिया में राष्ट्रवाद 309
डॉ0 प्रीती भदौरिया
12. आर्थिक राष्ट्रवादः एक विश्लेषण 317
डॉ0 पूनम वर्मा
13. राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद 322
डॉ0 दिलीप कुमार अवस्थी
14. भारतीय शिक्षा प्रणाली बनाम राष्ट्रवाद 330
डॉ0 प्रीति अग्रवाल
15. राष्ट्रवाद–धर्मान्धता एक चुनौती 336
डॉ0 अलका शर्मा
16. भारतीय राष्ट्रवाद में प्राथमिक शिक्षकों की भूमिका : एक तुलनात्मक अध्ययन 339
डॉ० रश्मि शुक्ला
17. राष्ट्रीय विकास में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद का योगदान 345
डॉ0 अर्चना मौर्या
18. राष्ट्रवाद की अवधारणा : एक चिन्तन 347
प्रीती सिंह

18.

राष्ट्रवाद की अवधारणा : एक चिन्तन

प्रीती सिंह

राष्ट्रवाद एक ऐसी भावना है जो देश के प्रति प्रेम, समर्पण, त्याग और बलिदान प्रकट करती है। जब कोई व्यक्ति देश के सभी नागरिकों के विकास और भलाई के विषय में समान रूप से बिना किसी धार्मिक, जातिगत, भेदभाव से बात करे। देश के सम्पूर्ण विकास के विषय की बात करे तथा राष्ट्रहित की भावना को सबसे ऊपर रखकर कार्य करे। समाज के हर वर्ग के लोगों की रक्षा करना उनकी मदद करना ही 'राष्ट्रवाद' हैं

राष्ट्रवाद राष्ट्र की आत्मा और जीवनी शक्ति को पुनर्जागृत करने का सशक्त माध्यम है। वह राष्ट्रीय जीवन की समस्त गतिविधियों, अनुभवों, अनुभूति, जागृति और पतन का दर्पण होती है इसलिए उसकी गहरी सहानुभूति और आस्था अपने देश की जनता के साथ होती है न कि शासकों के प्रति। राष्ट्रवाद का प्रधान लक्षण अतीत की गहराईयों का अनुसंधान है। प्रत्येक राष्ट्र की जीवन धारा में ज्वार भाटे की तरह उत्थान पतन पुनरूत्थान का अनवरत कम चलता रहता है।

मार्गरीटा वर्न्स के शब्दों मे :–"वास्तव मे भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता के विकास की कहानी है। सुशासन से स्वशासन, स्वराज्य से पूर्ण स्वतन्त्रता स्वंतत्रा की यात्रा कमशः विकसित राजनीतिक चेतना के प्रस्फुटन का इतिहास है।"[1]

राष्ट्रवाद के विषय में यह जान लेना आवश्यक है कि राष्ट्रीयता की भावना भारत में प्रारम्भ से ही रही है। भारत को एक राष्ट्र तथा एक पृथक भौगोलिक अस्तित्व की गरिमा प्राप्त की। भारत में राष्ट्रवाद का आधुनिक स्वरूप अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत बौद्धिक, पुनर्जागरण एवं दासता से मुक्ति के प्रयास में परिलक्षित होता हैं। भारतीय राष्ट्रवाद का उदय बौद्धिक पुनर्जागरण से माना जा सकता है।

डॉ0 वी0 वी0 वर्मा लिखते है –"भारत का बौद्धिक पुनर्जागरण आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का महत्वपूर्ण कारण था। जिस प्रकार इटली के पुनर्जागरण तथा जर्मनी के धर्मसुधार आन्दोलन ने यूरोपीय राष्ट्रवाद के उदय के लिए बौद्धिक आधार पर काम किया था इसी प्रकार भारत के सुधारको तथा धार्मिक नेताओं के उपदेशों ने देशवासियों में स्वतंत्र तथा आत्मनिर्णय पर आधारित राजनीतिक जीवन का निर्माण करने की इच्छा उत्पन्न की। भारतीय आत्मा के जागरण की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति